कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Krishna Sobti Tatha Indira Goswami Ke Upanyason Mein Stree Vimarsh

Thesis Submitted for the partial fulfilment of the requirements for the Degree Doctor of Philosophy in Arts

By

पूजा मिश्रा

POOJA MISHRA

हिंदी विभाग

DEPARTMENT OF HINDI

मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय

FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

PRESIDENCY UNIVERSITY, KOLKATA

अगस्त : 2023

AUGUST : 2023

कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Krishna Sobti Tatha Indira Goswami Ke Upanyason Mein Stree Vimarsh

Thesis Submitted for the partial fulfilment of the requirements for the Degree Doctor of Philosophy in Arts

By

पूजा मिश्रा

POOJA MISHRA

Under the supervision of

प्रो. तनुजा मजुमदार

PROF. TANUJA MAJUMDAR

हिंदी विभाग

DEPARTMENT OF HINDI

मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय

FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

PRESIDENCY UNIVERSITY, KOLKATA

अगस्त : 2023

AUGUST : 2023

कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Krishna Sobti Tatha Indira Goswami Ke Upanyason Mein Stree Vimarsh

पूजा मिश्रा/POOJA MISHRA
Registration No. R-18RS01210174
Date of Registration: 31st October, 2019
Department of Hindi

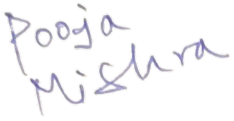

पूजा मिश्रा

शोधार्थी

घोषणा पत्र

मैं पूजा मिश्रा घोषित करती हूँ कि पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध **'कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श'** को मैंने परिश्रमपूर्वक अध्ययन, मनन और शोध के उपरांत तैयार किया है। इस शोध कार्य में मुझे निर्देशक के रूप में डॉ. तनुजा मजुमदार, प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता का मार्गदर्शन मिला है।

उपर्युक्त शीर्षक शोध प्रबंध हिंदी विभाग, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता के अलावा किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

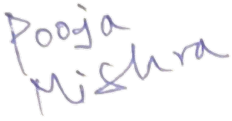

पूजा मिश्रा

हिंदी विभाग,

प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

पंजीयन संख्या: R-18RS01210174

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA
Presidency University
Hindoo College (1817-1855), Presidency College (1855-2010)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि पूजा मिश्रा ने पीएच-डी. उपाधि के लिए **'कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श'** शीर्षक शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में प्रस्तुत किया है।

यह शोध कार्य पूजा मिश्रा की मौलिक कृति है, न तो इसका कोई अंग उनके द्वारा किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत हुआ है और न ही मेरी जानकारी में अब तक किसी अन्य व्यक्ति ने इस पर शोध कार्य किया है।

मैं इन्हें शोध कार्य, आचरण और चरित्र की दृष्टि से इस उपाधि के योग्य एवं उपयुक्त समझती हूँ।

तनुजा मजुमदार

प्रोफ़ेसर तनुजा मजुमदार

शोध निर्देशक

हिंदी विभाग,

प्रेसिडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता

Prof. Tanuja Majumdar
Department of Hindi
Presidency University
Kolkata-700073

86/1, College Street, Kolkata - 700 073, Phone : (033) 2241 1960, Fax : (033) 2241 2738

भूमिका

'कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श' शीर्षक शोध प्रबंध में हिंदी और असमिया साहित्य की दो शीर्षस्थ लेखिकाओं कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों का स्त्री विमर्श की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने एक बहुभाषीय राष्ट्र की दो भाषाओं हिंदी तथा असमिया के माध्यम से दो भिन्न भू-भाग पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर के समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी स्वतंत्र अस्मिता और अपनी पहचान के लिए उसके संघर्ष का चित्रण उपन्यासों में कर स्त्री चेतना के स्वर को मुखर किया है। कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 में हुआ था। पचास के दशक में लेखन शुरू करने वाली कृष्णा सोबती 2019 तक लेखन में सक्रिय रहीं। इंदिरा गोस्वामी का जन्म 14 नवंबर 1941 में हुआ था। 13 वर्ष की छोटी आयु से लेखन शुरू करने वाली इंदिरा गोस्वामी 2009 तक लेखन में सक्रिय रहीं। दोनों रचनाकार अपने विभिन्न लेखों, वक्तव्यों और साक्षात्कारों के माध्यम से स्वयं को स्त्रीवादी लेखिकाओं की श्रेणी में रखे जाने की पक्षधर नहीं रहीं, तथापि इसमें कोई संदेह नहीं कि कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के साहित्य में उठाए गए स्त्री जीवन के विविध मुद्दों ने और स्त्री अस्मिता के प्रश्नों ने भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा दी। अस्सी के दशक में 'फेमिनिज़्म' की दूसरी लहर से भी पूर्व कृष्णा सोबती का उपन्यास 'मित्रो मरजानी' स्त्री यौनिकता के विषय को पहली बार हिंदी साहित्य में विमर्श के केंद्र में ले आया, तो दूसरी ओर इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' में धार्मिक स्थल में हो रहे स्त्री-शोषण के विशद चित्रण ने असमिया कथा साहित्य की धारा और पाठकों की सोच को बदल दिया। 1926 में वर्जीनिया वुल्फ़ ने 'वुमन एण्ड फिक्शन' निबंध के माध्यम से 'स्त्री भाषा' से जुड़े प्रश्नों को उठाया था। स्त्रीवादी लेखिकाओं लुईस ऐरिगरी, हेलेन सिक्सू, मोनिका वीटिंग, सांद्रा गिल्बर्ट, सुसान गुबर, दिलयुजी तथा गुएतरी इत्यादि ने 'स्त्री भाषा' के विभिन्न पक्षों पर अपनी बात रखते हुए 'स्त्री भाषा' को 'पुरुष भाषा' से भिन्न बताया है। 1976 के निबंध 'द लॉफ ऑफ द मेडुसा' में हेलेन सिक्सू स्त्री लेखन के लिए

'ऐक्रीचर फेमिनाइन' (Ecriture Feminine) शब्द गढ़ती हैं। लेकिन हम देखते हैं कि इन निबंधों के प्रकाशित होने से पूर्व ही कृष्णा सोबती 'डार से बिछुड़ी' तथा 'मित्रो मरजानी' के द्वारा स्त्री लेखन की विशिष्ट शैली ईजाद कर चुकी थीं। इसी प्रकार इंदिरा गोस्वामी के स्त्री पात्रों सौदामिनी, मृणालिनी, शशिप्रभा, निर्मला तथा गिरिबाला इत्यादि द्वारा जिस भाषा का व्यवहार किया गया है, वह स्त्री भाषा का नया तेवर है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि किस प्रकार कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी एक ओर पुरुष को स्त्री के प्रतिपक्ष में खड़ा करने के बजाय परिस्थितियों और घटनाओं को निष्पक्ष दृष्टि से देखते हुए विवादास्पद मुद्दों को उभार कर स्त्री अस्मिता के संकट को प्रस्तुत करती हैं तो दूसरी ओर स्त्री सशक्तिकरण का पथ विस्तृत करती हैं।

प्रस्तुत शोधप्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है-

प्रथम अध्याय '**स्त्री विमर्श: अवधारणा, स्वरूप और वैश्विक स्तर पर स्त्री चेतना का उदय एवं नारीवादी आंदोलन**' में स्त्री विमर्श की अवधारणा तथा स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है। स्त्री विमर्श के विभिन्न संप्रदाय यथा 'लिबरल फेमेनिज़्म', 'रेडिकल फेमेनिज़्म', 'समाजवादी', 'इको फेमेनिज़्म' तथा 'ब्लैक फेमेनिज़्म' इत्यादि की विशिष्टताओं को रेखांकित करने के साथ ही इनके मूल मंतव्य को रेखांकित किया गया है। वैश्विक स्तर पर स्त्री चेतना के उदय को स्त्री लेखन के साथ जोड़ कर देखने के साथ ही भारतीय तथा पाश्चात्य, दोनों विचारधाराओं के संदर्भ में नारीवादी आंदोलनों की पृष्ठभूमि का अध्ययन तथा दोनों विचारधाराओं के साम्य तथा वैषम्य को विवेचित किया गया है। इस अध्याय में आदिकालीन स्त्री लेखन, मध्यकालीन स्त्री लेखन, नवजागरण कालीन स्त्री लेखन और असमिया स्त्री लेखन पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय '**कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व**' में कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। इंदिरा गोस्वामी

के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में हिंदी में कम पठन सामग्री है। अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध उनके विभिन्न साक्षात्कारों, तथा उनके साहित्य पर आलोचनात्मक रचनाओं के माध्यम से उनके जीवन एवं कृतित्व को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के लेखन की प्रेरणा और उद्देश्य को समझने के साथ ही दोनों साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

तृतीय अध्याय '**कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी: स्त्री होने का अर्थ और स्त्री अस्मिता का संकट**' के अंतर्गत कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में पारिवारिक मान्यताओं, अशिक्षा, विवाहेतर संबंध, वैधव्य, कार्यस्थल की विषमताओं तथा सामूहिक हिंसा की त्रासदियों के कारण स्त्री पात्र किस प्रकार अस्मिता संकट से जूझते हैं इसका एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

चौथे अध्याय '**कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी: स्त्री का संघर्ष और स्त्री अस्तित्व की स्वतंत्र पहचान**' के अंतर्गत कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री जीवन के संघर्ष तथा संघर्षों के मध्य अपनी एक स्वतंत्र पहचान स्थापित करते स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री पात्र धार्मिक कुरीतियों, रूढ़िगत पारिवारिक मान्यताओं, दैहिक शोषण इत्यादि से संघर्ष करते हुए अपनी एक पहचान स्थापित कर पाए हैं। संघर्ष की दृष्टि से जहां दोनों उपन्यासकारों के स्त्री पात्रों में साम्य दिखाई पड़ता है वहीं संघर्ष के तरीके और व्यक्तित्व की दृष्टि से दोनों साहित्यकारों के स्त्री पात्रों में वैषम्य दिखाई पड़ता है।

पंचम अध्याय '**कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि**' के अंतर्गत 'स्त्री दृष्टि' तथा 'साहित्य में स्त्री दृष्टि' के तथ्यपूर्ण विवेचन के पश्चात कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने स्त्री दृष्टि के

माध्यम से अपने उपन्यासों में सामाजिक, पारिवारिक तथा धार्मिक जटिल संरचना में वर्ग, जाति तथा लिंग आधारित वैषम्य के विश्लेषण के आधार पर शोषण के मूल को समझने का प्रयास किया है।

छठे अध्याय '**कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में भाषा और शिल्प**' में कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की भाषा में स्त्री तत्वों की पहचान तथा उनके लेखन की विशिष्ट शैली को रेखांकित करने के साथ-साथ दोनों साहित्यकारों की उपन्यासों में भाषा और रचना शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी दोनों ही साहित्यकारों द्वारा साहित्यिक भाषा में उपभाषाओं, बोलियों, आत्मकथा शैली तथा लोक गीतों और लोक कथाओं का प्रयोग किया गया है। पात्र विशेष और क्षेत्र विशेष के अनुरूप संवादों से युक्त रचनाओं के सृजन के साथ कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने निजी भाषा शैली गढ़ी है।

मैं शोध निर्देशक प्रो. तनुजा मजुमदार के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सुचिन्तित सुझावों, सहयोग और प्रोत्साहन से मैं यह शोध प्रबंध पूरा कर पाई हूँ। उनके मार्गदर्शन से कठिन और दुविधापूर्ण परिस्थितियों में भी मेरा आत्मविश्वास बना रहा।

शोध को पूरा करने के क्रम में असमिया साहित्य के बांग्ला अनुवादक बासुदेव दास, अंग्रेजी तथा असमिया साहित्य के युवा लेखक अरुणि कश्यप, गुवाहाटी विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिलीप मेधी, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, शिलॉग के पूर्व निर्देशक प्रो. विद्या शंकर शुक्ल, नेता जी सुभाष ओपन विश्वविद्यालय में सेंटर फॉर लैंग्वेज, ट्रांसलेशन एण्ड कल्चरल स्टडीज के समन्वयक प्रो. मनन कुमार मंडल, साउथ ईस्ट एशिया रामायण रिसर्च सेंटर की निर्देशक तथा इंदिरा गोस्वामी की बहन सविता गोस्वामी से पूर्वोत्तर भारत से जुड़े विषयों पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मैं सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ।

मैं कलकत्ता विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग) की पूर्व प्रोफेसर चंद्रकला पाण्डेय का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे पीएच. डी. करने के लिए प्रेरित किया तथा अपने सुझावों से शोध विषय की समझ को स्पष्ट किया।

प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापकों डॉ. वेदरमण पाण्डेय, डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय, डॉ. ऋषि भूषण चौबे तथा डॉ. मुन्नी गुप्ता के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से शोध के लिए उपयुक्त वातावरण मिला।

प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय के परफॉरमिंग आर्ट्स विभाग की प्रोफ़ेसर डॉ. श्रीमती मुखर्जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने स्त्री विमर्श विषय से जुड़ी भ्रांतियों को दूर किया तथा मेरे ज्ञान को समृद्ध किया।

महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. गिरीश्वर मिश्र के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध विषय से संबंधित सामग्री समय-समय पर उपलब्ध कराई।

साकेत महाविद्यालय हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. अनुराग मिश्र के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनका मार्गदर्शन सदैव मिलता रहा।

अपने शोधार्थी मित्रों प्रियंका कुमारी सिंह, नेहा चतुर्वेदी, पूजा प्रसाद, श्रद्धा सिंह, कार्तिक रॉय, मधुमिता ओझा, निधि पाण्डेय, बृजेश प्रसाद, तथा किरीट देबनाथ के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से मुझे शोध के नए माहौल में भी अपनापन मिला।

अपने माता-पिता, अम्मा, बड़े भईया रविकेश मिश्र, दीदी मिन्टू मिश्रा, पूनम मिश्रा तथा निहारिका शुक्ला, अजिताभ मिश्र, सुधांशु शुक्ल, अनुभा शुक्ला तथा छोटी बहन नमिता शुक्ला का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से यह शोध अपने अंतिम पड़ाव तक पँहुचा।

घर के बच्चों निधि, खुशी, अग्रिमा, अमोघ तथा कैवल्य के प्रति भी हृदय से आभारी हूँ।

अंत में यह शोध पति राघवेंद्र मिश्र तथा बेटी स्निग्द्धा को समर्पित करती हूँ जिनके सहयोग के बिना इस शोध को पूरा कर पाना कठिन था।

साथ ही प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, राष्ट्रीय पुस्तकालय (कोलकाता), भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता) से मिले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।